Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | JANUARY 2025

लैंगिक समानता और नए भारत को आकार देने में महिलाओं की भूमिका

अनिता कुमारी [1] | प्रोफेसर प्रताप सिंह राणा [2]

[1] शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र, भगवंत विश्वविद्यालय अजमेर.

[2] डीन, शिक्षा संकाय, भगवंत विश्वविद्यालय अजमेर.

ABSTRACT:

लैंगिक समानता के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती स्त्री एवं पुरुष के कर्तव्यों एवं कार्यक्षेत्रों के बीच की खांई को मान सकते है। तत्पश्चात शारीरिक संघटन में विभेद करने की कुत्सित मानसिकता को माना जा सकता है। नए विश्व में विदेशों की महिलाओं की स्थिति प्रत्येक देश में अलग-अलग है, परंतु भारत में दोनों का कार्य क्षेत्र इतर मानना एवं शारीरिक संघटन के आधार पर विभेद करना या मानना गलत है। अगर इन दोनों अंतरों को, है, मानकर चलें तो यह अंतर प्रकृति प्रदत्त हो सकता है। बावजूद इन दो अंतरों के नए भारत में महिलाओं के समक्ष सामाजिक एवं धार्मिक मानसिकता से भी चुनौती मिलती है। अतः नए भारत में नर नारी को बराबरी का दर्जा नहीं मिल पाने में यह चार प्रमुख चुनौतियां हैं, कर्तव्य कर्तव्य, शारीरिक संघटन, सामाजिक एवं धार्मिक। नए भारत को नया आकार देने में इन चुनौतियों का समाधान निकलना होगा। फिर लैंगिक समानता के लिए विधेयात्मक प्रयास भी करते रहना है।वर्तमान भारत के निर्माण महिलाओं ने न सिर्फ राजनीति बल्कि आर्थिक, तकनीकी, चिकित्सा, सैन्य क्षेत्र और उससे भी ज्यादा निजी क्षेत्रों में भी महती भूमिका निभा रही है। बावजूद इसके लैंगिक समानता प्रतिमान विस्थापन हुआ है और अभी भी जो पक्षपात कार्य करते हैं उसके लिए रूढिवादी लोगों की तुमड़ी (मनोवृति) का घोल सरल करने के लिए न्यायालय का भी सहारा लेने से नहीं हिचकिचाना चाहिए ।अतः लैंगिक समानता की दिशा में सरकारी एवं निजी प्रयासों से नए भारत में महिलाओं की गरिमा पूर्ण प्रतिस्थापित हो पाएगी ।

KEYWORDS:

लैंगिक समानता, चार चुनौतियां, शारीरिक संघटन, विधेयात्मक प्रयास, प्रतिमान विस्थापन, मनोवृति ।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
26th January 2025	30th January 2025

प्रस्तावना -

- नारी - अप, नर (परमात्मा) + ई प्रत्यय (स्त्रीलिंग) अतः नर का स्त्री प्रत्यय नर - नारी है। मनुस्मृति श्लोक 1/9 में यह शब्द वाच्य दिया है।
- स्त्री -ईश्वर की सुन्दर कृत
- महिला - महि (पृथ्वी) + ला (उत्पन्न) अर्थात् पृथ्वी की तरह उत्पन्न करने की शक्ति धारण करने वाली ।
- जाया - संतान उत्पन्न करने वाली स्त्री को जाया कहते है।
- औरत - दूसरे के रत (क्रिया) में संलग्न । यह शब्द मध्यकालीन सहित्य में है। भारतीय वांड्मय मे यह अभद्र शब्द कही नही मिलता है।

वस्तुतः नारी के अनेक रूप है, जिसमें पुत्री, पत्नी, माता में से माता सर्वाधिक पूज्यनीय रूप है। ''नारी स्थिति'' एवं उसकी ''शिक्षा व्यवस्था'' दोनो एक ही भाव प्रकट करते है। जब कहा जाय नारी की स्थिति या दशा कैसी थी। उसकी शैक्षिक संस्थिति का पता चलता है। और कहा जाय कि स्त्रियों की शिक्षा व्यवस्था कैसी थी तब उसकी स्थिति का पता चलता है।

महिलाओं के लिए अनेक तरह की नीतिगत प्रतिबद्धताए हैं।[1] लेकिन क्या महिला शक्ति संपन्नता की प्रकल्पना पूरी हो पा रही है। यह एक विचारणीय प्रश्न है भारत में महिलाओं के लिए अनेक संवैधानिक उपबंध किए गए है ।कुछ विशिष्ट कानून है, आर्थिक कानून भी बने हैं जिसमें महिलाओं की सुरक्षा के उपबंध किए गए ।संरक्षण कानून ,सामाजिक कानून बने हैं ।पंचवर्षीय योजना दस्तावेजों में महिलाओं हेतु निधियां तय की गई। भारत सरकार द्वारा बजटीय कार्य का वर्गीकरण पर गठित अशोक लाहिडी समिति की सिफारिश पर वर्ष 2005-6 के बजट में महिला संवेदी बजट ,जेंडर बजटिंग भी निर्धारित किया गया। इसने समानता एवं कार्य कुशलता में बहुत दूर तलक इशारा किया। इससे लिंग जनित असमानता को आर्थिक विकास के जरिए हल करने की कोशिश की गई। अतः भारत में लैंगिक विषमता के सामाजिक कारणों,धार्मिक कारणों, एवं आर्थिक कारणों जैसे तमाम कारणों का समाधान करने का मार्ग प्रशस्त किया है। इसने भारत की तकनीकी सोच का जो रसायन बदला है उससे बालिका शिक्षा की गति तेज रफ्तार से दौड़ने लगी है। यह एक प्रकार का प्रतिमान विस्थापन है और भारतीय महिलाएं विकास की मुख्य धारा से जुड़ चुकी हैं,जिससे नए भारत के निर्माण में इनकी महती भूमिका है। अतःमहिलाअध्ययन,अध्यापन,शिक्षण, एवं प्रशिक्षण, विधेयात्मक पहलुओं, राजनीतिक रणनीतियो से नए भारत के सपने को साकार करने में इनकी भूमिका की विवेचना समीचीन प्रतीत होती है,

महिला अध्ययन का प्रतिमान विस्थापन प्रतिमान -

विस्थापन किसी भी सिद्धांत के अध्ययन के बदलाव के लिए प्रयुक्त होता है अर्थात किसी प्रतिमान या सिद्धांत का समय के साथ परिवर्तन होने तथा नए सिद्धांत का रूप लेने की प्रक्रिया है। तो महिला अध्ययन के तरीके में भी समयानुसार परिवर्तन होता रहा है जिसकी स्थिति भारत में तीन चरणों या सोपानो में दिखाई देती है[2] एक,19वीं शताब्दी एवं स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान दो ,आजादी के तुरंत बाद 1960 के दशक तक तीन ,1970 के दशक के बाद। नए भारत के निर्माण में भारतीय महिलाओं का योगदान कम नहीं है ।जहां पहले एवं दूसरे चरण में स्वतंत्रता आंदोलन एवं उसके प्रभाव से आच्छादित केवल कुछ प्रबुद्ध शिक्षित घरों की महिलाएं देश की राजनीति में सक्रिय रही। परंतु 1970 के दशक के बाद से लेकर 1990 के दशक तक सशक्तिकरण मुख्य केंद्र बिंदु था। 1990 के दशक के बाद जेंडर अध्ययन का भी संदर्भ जुड़ जाता है। अतः महिला अध्ययन का जेंडर अध्ययन में प्रतिमान विस्थापन होता है। महिला अध्ययन में सदैव महिलाओं से संबंधित विषयों एवं मुद्दों को उठाया जाता था ।इसमें उन बिंदुओं पर वार्ता होती थी, समाचार पत्रों में लेख निकलते थे, जिससे महिलाओं की स्थिति में सुधार लाया जा सके। परंतु दुर्भाग्यपूर्ण है कि इसमें जेंडर अध्ययन कैसे जुडा। वस्तुतः जब महिलाओं की समस्या का अध्ययन महिला विद्वान या शोधार्थी ने किया तो वह ग्रामीण महिला, शहरी महिला, शिक्षित महिला, अशिक्षित महिला, गरीब घरों की महिला यही रहा। परंतु समाज की संरचना में पुरुषों की भूमिका हमेशा से विभेद पूर्ण रही। और जब पुरुषों ने महिलाओं के विषय में सोचा एवं लिखना शुरू कर दिया तो उसमें जेंडर का नजरिया प्रवेश कर दिया गया। इसलिए जेंडर अध्ययन का प्रतिमान

विस्थापन होता है ।जेंडर अध्ययन महत्वपूर्ण इसलिए भी मान सकते हैं की प्रत्येक सामाजिक, आर्थिक , राजनीतिक कार्यों में स्त्री पुरुष दोनों के परिप्रेक्ष्य पर विचार किया जाता है। इस लिहाज से जेंडर अध्ययन से जो प्रतिमान विस्थापन होता है उसमें स्त्री पुरुष को सामान बनाने की ही बात नहीं होती है बल्कि प्रत्येक प्रकार की योनिक वरीयता को समाप्त कर सबकी सामानता से भी आगे विचारने की बात है कि सबकी विभिन्नता का समापन।

लैंगिक विषमता का कारण एवं समाधान हेतु विधेयात्मक प्रयास -

लैंगिक विषमता के अनेक कारण हैं जिसमें सबसे प्रमुख कारण है स्त्री पुरुष के शारीरिक संघटन में अंतर मानना।[3] वैसे सामाजिक, धार्मिक रूप से स्त्री को हीन बताना को हम महिलाओं ने चुनौती भी दे डाली है, परंतु उपभोक्तावादी बाजार ने हमारा सबसे ज्यादा नुकसान किया है। हमारे शारीरिक संघटन में अंतर प्रकृति प्रदत्त है ।उसको तो ईश्वर की कृति मानना पड़ता है। स्त्री का शाब्दिक अर्थ ही होता है ईश्वर की कृति।लेकिन इसे ईश्वर की सुंदर कृति बताने से सुंदर शब्द में स्त्री को कामुक मशीन बना दिया । प्रत्येक पुरुष जो अपरिपक्व मानसिकता का होता है वह नारी में इसी सुंदरता को ही तलाशता है। क्या कारण है कि प्रत्येक ऑफिसों की रिसेप्शनिस्ट सुंदर महिला को ही बनाया जाता है। मौर्या अमित (2020),''वोमेन राइट्स इन इंडिया: ए स्टडी विथ स्पेशल रिफरेंस टू जेण्डर जस्टिस एट वर्कप्लेस, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, इसमें कार्य स्थल होने वाली लैंगिक पक्षपात को दर्शाया गया है [4] ।

बाजार की सारी अच्छी बुरी चीजों के पैकेट पर सुंदर, गोरी, छरहरी बदन ही छापी जाती है। हद तो तब हो जाती है जब उस चीज का उपयोग पुरुष भी करते हैं । क्रीम, पाउडर को तो छोड़ ही दीजिए प्रत्येक उपभोग की चीजों ने नारी को भी उपभोग वस्तु बना दिया । अतः लैंगिक विषमता के तमाम कारणों में शारीरिक संघटन में कामुकता के प्रवेश ने नारी, स्त्री, महिला को औरत (दूसरे के रत) की चीज बना दिया।

लैंगिक विषमता के समाधान हेतु भारत सरकार एवं कई राज्य सरकारों ने विधेयात्मक प्रयास भी किया है जिसके फलस्वरूप विषमता कुछ हद तक कम हो सकी है ,परंतु सबसे अच्छा प्रयास शैक्षिक विधानो से हुआ है। सर्व शिक्षा अभियान ,शिक्षा को मूल अधिकार बनाना, अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम, इत्यादि से हम भारतीय अभिभावकों की मनः स्थिति बालिका शिक्षा पर बदली है । अर्थात नई पीढी बदल रही है। महिला आरक्षण विधेयक पास हो ना हो कोई फर्क नहीं पड़ता । इससे तो केवल राजनीतिक भागीदारी बढेगी । बेहतर होगा कि चुनाव आयोग सीटों में आरक्षण हेतु पार्टियों पर बाध्यता लागू कर दें । सरकारी सेवा में 50: लागू कर दिया जाए केवल प्राथमिक शिक्षक भर्ती से कुछ नहीं होने वाला है। इंजीनियरिंग, मेडिकल, सिविल सेवा, सभी सेवाओं में यदि 50: की व्यवस्था लागू हो जाए तो लैंगिक विषमता को दूर करना सबसे सरल बन जाएगा।

लैंगिक समानता और शिक्षा -

लैंगिक समानता के लिए शिक्षा एक सशक्त माध्यम है। किंतु अभी इसमें हम पूर्ण सफल नहीं हुए हैं । राष्ट्रीय शिक्षा नीति[5] 1986 में महिला शिक्षा की भूमिका ने कुछ नई संभावना दी थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति[6] 2020 में स्त्री शिक्षा पर अलग से प्रकरण नहीं दिया गया अपितु नीति के खंड 6.8 में जो शैक्षिक प्रस्ताव दिया गया है उससे बालिका शिक्षा को बढावा मिलने की पूरी संभावना है ।यहां सवाल शैक्षिक प्रयास का ही नहीं है जब तक महिलाएं स्वयं अर्थोपार्जन नहीं कर पाएंगी तब तक समानता की बात सोचना दूर की बात होगी । इसलिए ऐसी शिक्षा व्यवस्था की जरूरत है जिसमें महिला शिक्षा, प्रशिक्षण, आवास, भोजन, स्थानांतरण, पदोन्नति की व्यवस्था को सरल बनाया जा सके । योजना पत्रिका[7] मार्च 2004 जो स्त्री पुरुष समानता पर आधारित अंक है, पृष्ठ 38 पर लिखित लेखिका का यह विचार बेहद सराहनीय है कि समानता के लिए महिलाओं की जिंदगी के लिए जीवनो पयोगी अभ्यास क्रम तैयार करना परम आवश्यक जिसमें शिक्षा के आयोजन एवं प्रबंध का विकेंद्रीकरण कर लोगों को समाविष्ट करने का कार्य स्थानीय समुदाय, ग्राम शिक्षा समिति से प्रारंभ करके उच्च शिक्षा मानको तक रचनात्मक सोच के साथ प्रयत्न करना होगा । पुनः इसी पृष्ठ पर लेखिका लिखती है कि पशुपालन, जमीन संरक्षण, खेती, सामाजिक वनीकरण, गृह विज्ञान, डेरी विज्ञान, दुग्ध उद्योग के साथ-साथ इतिहास, विज्ञान, सैन्य विज्ञान, रसायन, भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान जैसे तमाम वैकल्पिक विषयों एवं इंजीनियरिंग, मेडिकल, रेलवे, बैंकिंग सेवा इत्यादि विभिन्न क्षेत्रों की शिक्षा एवं सेवा में स्त्री की पहुंच स्थापित होने पर ही लैंगिक समानता व्यवहारिक धरातल पर दिखाई देगी। अन्यथा आयोगो के पन्नो पर विचार देने से कुछ नहीं होगा।

नए भारत निर्माण में महिलाओं की भूमिका -

वर्तमान समय में महिलाओं की स्थिति कैसी है? स्थिति मे परिवर्तन कैसे हो रहा है? तथा महिला सशक्तिकरण कैसे हो रहा है? सशक्तिकरण की गति कितनी रही है। इन सभी का प्रमुख श्रेय शिक्षा के प्रसार - प्रचार को है, फिर भी स्त्री शिक्षा में चुनौतियाँ मौजूद है। स्वतन्त्र भारत में किये गये नीतिगत प्रयासों से इनकी स्थिति में निः संदेह परिवर्तन हुआ है फिर भी समस्याएं मौजूद है इसीलिए शोधार्थी को भारतीय नीतिगत प्रस्तावों का भी मूल्यांकन की आवश्यकता महसूस हो रही है

स्त्री पुरुष सामाननता क्या है, कैसे, जेंडर बजटिंग का संवेदी मुद्दा के लिए योजना पत्रिका अंक 7 अक्टूबर 2006 में महिला समानता हेतु उठाए गए कदम पठनीय हैं।[8] आधी दुनिया का सच यह है कि बदलाव आया है। यहां पितृसत्ता या मातृसत्ता का सवाल नहीं है बल्कि लैंगिक विषमता को चीरते हुए तमाम भारतीय महिलाओं ने राष्ट्र के निर्माण में जो माहती भूमिका निभाया है और निभा रही हैं उससे नए भारत के निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। राजनीतिक परिदृश्य में तमाम महिलाएं दिखाई पड़ती हैं ।तमाम नामो को न गिनाते हुए उसे एक शब्द में कहा जा सकता है कि भारतीय राजनीति का समाजीकरण हो रहा है। और इस समाजीकरण में हाशिये पर खड़ी महिला, दलित, शोषित ,पिछड़ी अब केंद्र में होते हैं। संविधान के 73 में एवं 74 में संशोधन ने महिलाओं को नेतृत्व करने का अवसर दिया है। हालांकि अभी भी प्रधानपति अपनी हुकूमत चलते हैं लेकिन निकट भविष्य में महिलाओं ने समाज में अपना उचित स्थान पाने का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं जिससे महिलाओं की दशा में गुणात्मक अंतर आएगा । भारतीय सिनेमा के फिल्म की प्रकृति नारी की समस्या पर बनी वह अलग बात है। परंतु किरदार की भूमिका से अनेकों नेत्रियों ने महिला की स्थिति का मजबूत प्रदर्शन किया है । महिला स्वास्थ्य के सामाजिक आयामो में वृद्धि का ही परिणाम है कि देश में बाल मृत्यु दर एकदम घट चुकी है । महिला के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य से सामाजिक तंदुरुस्ती की सकारात्मक अवस्था बनी है । स्वस्थ नारी से स्वस्थ बच्चा एवं स्वस्थ राष्ट्र का निष्पादन होता है । क्योंकि गरीबी का सीधा संबंध बुरे स्वास्थ्य से है । गरीब के लिए सरकारी अस्पताल वरदान है। हमारी नर्सें नए भारत को सिरिंज से सींचती है।गांव की गरीब महिला मौन चुप्पी संस्कृति को तोड़ रही है ।और सुरक्षित मातृत्व के माध्यम से राष्ट्र कल्याण में योगदान दे रही है। वित्त ,ऊर्जा, परिवहन ,उद्योग ,सैन्य विज्ञान ,एवं प्रौद्योगिकी जैसी मुख्यधारा का शिक्षा एवं स्वास्थ्य से मिलने से नारियोचित संवेदनाओ ने लिंग परक संवेदना को धूल धूसरित कर समानता एवं कार्यकुशलता का नया आयाम मिलने से नए भारत में स्त्री पुरुष दोनों की भूमिका एवं दायित्व बढ जाता है। शिक्षा नीति 2020 में किये गये प्रयासों के द्वारा महिला सशक्तीकरण की गति बढ़ाई जा सकती है।

निष्कर्ष -

स्त्री पुरुष समानता की ओर बढे कदमों में पहला कदम किसी महिला का होना ही नई भारत निर्माण में महिला की भागीदारी सुनिश्चित करता है। लैंगिक समानता लाने में शिक्षा की महती भूमिका रही है।[9] विषमता के सामाजिक, धार्मिक एवं गरीबी के कारणों को पीछे करते हुए भारतीय महिलाएं राजनीति ,अर्थव्यवस्था, तकनीकी, इंजीनियरिंग ,चिकित्सा ,एवं स्वास्थ्य, सैन्य क्षेत्र, तथा शिक्षा प्रक्रिया में उनकी भागीदारी होने से न केवल लिंग आधारित विभेद दूर हुए अपितु नारी जाति ने देश की मुख्यधारा के साथ कदमताल प्रारंभ कर दिया है ।महिला अध्ययन का नजरिया भी बदला है । यह जेंडर अध्ययन के प्रतिमान विस्थापन को प्राप्त हुआ है। और पुनः सशक्तिकरण बनकर उभरा है । संवैधानिक उपबंधों के साथ-साथ अनेक विधेयात्मक उपबंध भी हुए हैं ।नारियों के शारीरिक संघटन को प्राकृतिक न मानते हुए कुछ लोगों ने औरतों में कामुकता को देखना ही समाज का सबसे बड़ा दंश रहा है । इन समस्त झंझावातों का समाधान करने में शिक्षा सबसे कारगर हथियार साबित हुई है । और राष्ट्रीय नीतियों में इसके लिए प्रयास के फलस्वरुप महिला स्वरोजगार एवं अर्थोपार्जन कर पा रही है ।पंचायती राज व्यवस्था ,सिनेमा, राजनीति ही नहीं गृह विज्ञान, डेरी उद्योग ,विज्ञान व तकनीकी क्षेत्र ,रेलवे, बैंकिंग ,निजी क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी से 21वीं सदी के भारत की एक नई तस्वीर उभरी है जो हमारी राजनीति ,सामाजिक तंदुरुस्ती का गुणात्मक आयाम है।

REFERENCES

1. गुप्ता, एस,पी (2015)भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएं ,शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, पृष्ठ 440-43

2. शर्मा ,सविता(2018) लिंग विद्यालय एवं समाज, श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, पृष्ठ, 160

3. त्रिपाठी ,प्रतिमा (2017) लिंग विद्यालय एवं समाज ,अग्रवाल प्रकाशन आगरा, पृष्ठ 2

4. मौर्या अमित (2020),''वोमेन राइट्स इन इंडिया: ए स्टडी विथ स्पेशल रिफरेंस टू जेण्डर जस्टिस एट वर्कप्लेस, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, http:hd1.hand1e.net/10603/342138

5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 , ड्राफ्ट भाग 4, पृष्ठ 3, भाग 6, पृष्ठ 9

6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 , ड्राफ्ट अध्यक्ष बिंदु 6.8 पृष्ठ 40,

7. योजना पत्रिका , अंक 12, मार्च 2004, पृष्ठ 38,

8. योजना पत्रिका ,अंक 12 ,मार्च 2004 ,पृष्ठ 38, 8,योजना पत्रिका, अंक 50, अक्टूबर 2006 ,पृष्ठ 7 से 61 तक कई लेख दृष्टव्य।

9. वार्षिक रिपोर्ट 2020-21 (हिन्दी संस्करण पी डी एफ फाइल) भारत सरकार मानव संसाधन शिक्षा मंत्रालय, स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग और उच्च शिक्षा विभाग।